शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh Online Available at https:// www.shodhutkarsh.com ISSN-2993-4648
वर्ष - 04 अंक– 13 जनवरी - मार्च - 2026 Impact factor– 4.5

भारत की विदेश नीति की बदलती गतिशीलता : चुनौतियाँ एवं भावी दिशा

डॉ. आर. एम. कुम्हार
सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान
प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस, सं.गॉ.स्मृति शासकीय महाविद्यालय,
सीधी, (म.प्र.) – 486661Email id – ram.milanap@gmail.com

सारांश-किसी भी देश की विदेश नीति उसके अन्य देशों के साथ पारस्परिक संबंधों को निर्धारित करती है। कोई भी राष्ट्र बिना विदेश नीति के न तो उन्नति कर सकता है और न ही अपने अस्तित्व को सुरक्षित रख सकता है। किसी राष्ट्र के लिए अपनी विदेश नीति का निर्धारण करते समय उसके राष्ट्रीय हितों का ध्यान रखना अत्यंत आवश्यक होता है।

भारतीय विदेश नीति का उद्देश्य सभी देशों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करना तथा राष्ट्रीय हितों को सर्वोपरि रखते हुए उनका संवर्धन करना है। इसके साथ ही यह लोकतांत्रिक मूल्यों, बहुपक्षवाद, नागरिकों के सम्मान तथा मानवाधिकारों के संरक्षण पर विशेष बल देती है।

भारतीय विदेश नीति का प्रमुख लक्ष्य प्रारंभ से ही रंगभेद का विरोध करना, साम्राज्यवाद का प्रतिरोध करना, अंतर्राष्ट्रीय शांति एवं सद्भाव बनाए रखना तथा शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धांतों का पालन करना रहा है। इसके अतिरिक्त यह गुटनिरपेक्षता तथा स्वतंत्रता आंदोलनों के समर्थन की नीति पर आधारित रही है। भारत की विदेश नीति पंचशील के सिद्धांतों से प्रेरित रही है।

भारत लंबे समय तक पराधीन रहने के पश्चात स्वतंत्र हुआ है, इसलिए स्वतंत्रता और संप्रभुता की रक्षा भारतीय विदेश नीति का अभिन्न अंग है। साथ ही बेरोजगारी, भूखमरी तथा जनसंख्या वृद्धि जैसी आंतरिक समस्याओं के समाधान हेतु विकसित देशों के साथ सहयोग स्थापित करना भी हमारी विदेश नीति का महत्वपूर्ण उद्देश्य है।

भारत वैश्विक स्तर पर जलवायु परिवर्तन, निरस्त्रीकरण, वैश्विक संसाधनों के न्यायसंगत उपयोग तथा अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के उन्मूलन जैसे विषयों पर सक्रिय भूमिका निभाता रहा है। भारत ने सदैव परमाणु खतरे से निपटने तथा विश्व स्तर पर परमाणु निरस्त्रीकरण का समर्थन किया है तथा यह भी आग्रह किया है कि परमाणु ऊर्जा का उपयोग केवल शांतिपूर्ण एवं विकासात्मक कार्यों के लिए किया जाए।

भारतीय विदेश नीति के उद्देश्य-भारतीय विदेश नीति के प्रमुख उद्देश्यों में क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा करना, आर्थिक विकास को बढ़ावा देना, संप्रभुता की सुरक्षा करना तथा गुटनिरपेक्ष नीति का अनुसरण करना प्रमुख है।

भारतीय विदेश नीति की विशेषताएँ-भारतीय विदेश नीति की प्रमुख विशेषताएँ असंलग्नता, राष्ट्रीय सहमति, राष्ट्रीय हित, विश्व शांति, अच्छे पड़ोसी की नीति, साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद एवं रंगभेद का विरोध करना रही हैं। भारत ने सदैव अपनी विदेश नीति में अरब समर्थक नीति अपनाई है। इसके साथ ही हमारी विदेश नीति में सैनिक गुटों का विरोध, मानवाधिकारों का समर्थन, संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रति निष्ठा तथा अफ्रो-एशियाई देशों के सहयोग का विशेष महत्व रहा है। भारत ने निःशस्त्रीकरण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त करते हुए उत्तर-दक्षिण एवं दक्षिण-दक्षिण संवाद को भी प्रोत्साहित किया है।

विदेश नीति को प्रभावित करने वाले तत्व

1. भू–राजनीति-भू-राजनीति किसी भी देश की भौगोलिक स्थिति तथा उसकी सामरिक क्षमता को प्रभावित करती है। हॉलफोर्ड मैकिंडर (1919) तथा निकोलस स्पाइकमैन ने स्थलाकृति, आकार, जलवायु, राज्यों के मध्य दूरी तथा बाह्य स्थिति जैसे कारकों को किसी भी राष्ट्र की विदेश नीति के महत्वपूर्ण निर्धारक माना है।[1]

2. सैन्य सामर्थ्य-सैन्य शक्ति के आधार पर कोई भी राष्ट्र अन्य देशों के संबंध में निर्णय लेने तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सम्मान प्राप्त करने का प्रयास करता है। इसके अतिरिक्त आर्थिक शक्ति भी विदेश नीति को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। विकसित राष्ट्र अपनी आर्थिक शक्ति के बल पर वैश्विक स्तर पर सक्रिय रहते हैं।

शासन प्रणाली भी विदेश नीति को प्रभावित करती है। यदि किसी देश में लोकतांत्रिक व्यवस्था होती है, तो जनमत, हित समूह तथा जनसंचार माध्यम नीति-निर्माण एवं निर्णय प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं। इसी प्रकार घरेलू आवश्यकताएँ भी किसी देश की विदेश नीति के निर्माण एवं संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

विदेश नीति : साहित्य का पुनरावलोकन

1. मैकियावेली के अनुसार, विदेश नीति सरकार का ऐसा प्रमुख साधन है जिसके माध्यम से सामान्य हितों की पूर्ति हेतु नागरिकों को एकीकृत किया जाता है।[2]

2. किसी भी देश की विदेश नीति के निर्माण में उसके इतिहास का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान होता है। अतीत के अनुभवों के आधार पर ही कोई राष्ट्र अपनी विदेश नीति का निर्धारण करता है।[3]

3. प्रो. टेलर के अनुसार—
"अधिकांश देशों की विदेश नीति उनकी भौगोलिक स्थिति एवं उनके पड़ोसी देशों के व्यवहार द्वारा निर्धारित होती है।"[4]

4. प्रोफेसर ब्लैक एवं थॉम्पसन के अनुसार—
"किसी विशेष समय में कोई राष्ट्र जो भूमिका निभाता है तथा जिस प्रकार की विदेश नीति अपनाता है, वह उन व्यक्तियों की विशेषताओं पर निर्भर करती है जो उस समय नीति-निर्माण की स्थिति में होते हैं।"[5]

5. अमेरिकी स्वतंत्रता की घोषणा में कहा गया है कि—
"सभी मनुष्य समान पैदा हुए हैं। ईश्वर ने उन्हें कुछ ऐसे अधिकार प्रदान किए हैं जिन्हें छीना नहीं जा सकता। इन अधिकारों में जीवन, स्वतंत्रता तथा सुख प्राप्त करने का अधिकार प्रमुख है। इन अधिकारों की रक्षा के लिए लोग सरकार का गठन करते हैं तथा सरकार को अपने अधिकार जनता की सहमति से प्राप्त होते हैं।"[6]

6. सन् 1946 में पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा था—
"जहाँ तक संभव हो, हमारा प्रयास रहेगा कि हम परस्पर विरोधी शक्ति-गुटों से स्वयं को अलग रखें। यही वे गुट हैं जिनसे विश्व युद्ध उत्पन्न हुआ और भविष्य में भी विनाश का कारण बन सकते हैं।"**[7]

7. पंडित जवाहरलाल नेहरू ने 04 दिसम्बर 1947 को संविधान सभा में राष्ट्रीय हितों के संबंध में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा था कि आप चाहे कोई नीति अपनाएं विदेश नीति का निर्धारण करने की कला राष्ट्रीय हित के संपादन में ही निहित है। हम अंतराष्ट्रीय शांति, सहयोग और स्वतंत्रता की चाहे कितनी भी बाते करें और कैसा ही अर्थ लगाएं किन्तु अत्तोगत्वा सरकार अपने राष्ट्र के भलाई के लिए ही कार्य करती है और कोई भी सरकार ऐसा कोई भी कदम नहीं उठा सकती है जो उसके राष्ट्र के लिए अहितकर हो । अत: सरकार का स्वरूप चाहे साम्राज्यवादी अथवा समाजवादी, उसका विदेश मंत्री मूलत: राष्ट्रीय हित के लिए ही सोचता है। [8]

8. पैडलफोर्ड एवं लिंकन के अनुसार विदेश नीतियों का निर्माण केवल सैद्धांतिक आधार पर नहीं होता, बल्कि यह राष्ट्रीय हितों के व्यावहारिक चिंतन का परिणाम होता है।[9]

भारतीय विदेश नीति का अध्ययन मुख्यतः दो भागों में किया जा सकता है—

भारत का पड़ोसी राष्ट्रों के साथ संबंध।

भारत का अन्य राष्ट्रों के साथ संबंध।

भारत के अधिकांश पड़ोसी देशों के साथ संबंध सामान्यतः सौहार्दपूर्ण रहे हैं। यद्यपि पाकिस्तान के साथ संबंध ऐतिहासिक, राजनीतिक एवं सुरक्षा संबंधी कारणों से समय-समय पर तनावपूर्ण रहे हैं। पाकिस्तान का निर्माण ही धार्मिक आधार पर हुआ था और आज भी दोनों देशों के संबंध विभिन्न कारणों से प्रभावित होते रहे हैं।

भारत के अन्य पड़ोसी देशों, जैसे श्रीलंका, बांग्लादेश, नेपाल, भूटान तथा मालदीव के साथ संबंध सामान्यतः अच्छे रहे हैं। यद्यपि समय-समय पर इन देशों की आंतरिक राजनीतिक परिस्थितियों एवं कुछ अलगाववादी तत्वों के कारण भारत-विरोधी गतिविधियाँ देखने को मिलती रही हैं।

भारत ने **अमेरिका, रूस, जापान, चीन, फ्रांस, इज़राइल** तथा अन्य देशों के साथ अपने राष्ट्रीय हितों के आधार पर संबंध स्थापित किए हैं। भारतीय विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय शक्ति संतुलन बनाए रखना भी रहा है। इसी कारण भारत ने लंबे समय तक किसी सैन्य गुट का सदस्य बनने के स्थान पर **गुटनिरपेक्ष आंदोलन** की नीति को अपनाया।

भारत की विदेश नीति का यह भी उद्देश्य रहा है कि नवस्वतंत्र देशों को गुटनिरपेक्षता के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया जाए तथा विश्व के किसी भी भाग में स्वतंत्रता आंदोलनों का नैतिक समर्थन किया जाए। इसके साथ ही भारत ने **जलवायु परिवर्तन**, **अंतर्राष्ट्रीय पूँजीवाद की चुनौतियों**, तथा **आतंकवाद के उन्मूलन** जैसे वैश्विक मुद्दों पर भी सक्रिय भूमिका निभाई है।

निष्कर्ष:-

भारतीय विदेश नीति के केंद्र में राष्ट्रीय हित, साम्राज्यवाद का विरोध, आतंकवाद का उन्मूलन, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व में विश्वास, पंचशील के सिद्धांतों का पालन, गुटनिरपेक्षता की नीति तथा अंतर्राष्ट्रीय शक्ति संतुलन बनाए रखने की भावना निहित है। भारतीय विदेश नीति समय के साथ बदलती वैश्विक परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को निरंतर विकसित करती रही है।

****

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. नेमा, डॉ. जी.पी. त्रिपाठी डॉ. डी.सी. ." ,भारत एवं विश्व" ,संस्करण–6, वर्ष 2012 “6”
2. नेमा, डॉ. जी.पी. त्रिपाठी डॉ. डी.सी. ." ,भारत एवं विश्व" ,संस्करण–6, वर्ष 2012 “7”
3. वीर, प्रो. डॉ. गौतम, अंतर्राष्ट्रीय संबंध" ,वर्ष 2021, पृष्ठ 185–186
4. वीर, प्रो. डॉ. गौतम, अंतर्राष्ट्रीय संबंध" ,वर्ष 2021, पृष्ठ 181
5. वीर, प्रो. डॉ. गौतम, अंतर्राष्ट्रीय संबंध" ,वर्ष 2021, पृष्ठ 187–188
6. चौहान, घनश्याम, "अमेरिका का इतिहास" ,वर्ष 2021, पृष्ठ 70
7. सिंह, डॉ. राधेश्याम, "समकालीन विश्व का इतिहास" ,वर्ष 2020, पृष्ठ 207
8. बघेला डॉ. हेत सिंह, "एशिया का इतिहास" ,वर्ष 2015–16, पृष्ठ 343
9. बघेला डॉ. हेत सिंह, "एशिया का इतिहास" ,वर्ष 2015–16, पृष्ठ 343

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh (RESEARCH ARETE JOURNAL)

जनवरी - मार्च - 2026

त्रैमासिक ऑनलाइन पत्रिका - 'शोध उत्कर्ष'